गुलबर्गा विश्वविद्यालय गुलबर्गा

हिन्दी विभाग

एवं

हैद्राबाद कर्नाटक हिन्दी प्राध्यापक साहित्य और सांस्कृतिक संघ

आपको आमंत्रित करते हैं

हिन्दी अनुवादः उपनिवेश से उत्तर-उपनिवेश तक

एक दिन के कार्यागार में

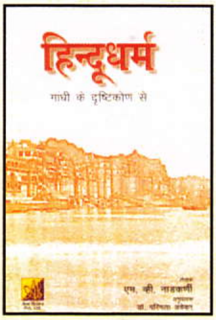

साथ ही

हिन्दूधर्म गांधी के दृष्टिकोण से

(प्रो एम् व्ही नाडकर्णी द्वारा रचित
Hinduism: A Gandhian Perspective का
डॉ परिमळा अंबेकर द्वारा किया गया हिन्दी अनुवाद,
प्रकाशनःएनी बुक्स प्रा लि, नई दिल्ली)

ग्रंथ के अनावरण समारोह

में

दिनांक २९ अक्तूबर २०११ समय प्रातः १०.३० बजे

स्थानः अनुभव मंटप, बसवादी शरण साहित्य केन्द्र, गु वि गु .

आपकी उपस्थिति अनिवार्य है

डॉ परिमळा अंबेकर	प्रो ए डी शेरिकार	प्रो एस् एल् हिरेमठ
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग गुविगु	कार्याध्यक्ष	कुलसचिव,
अध्यक्ष, है क हि प्रा सा सां संघ	है क हि प्रा सा सां संघ	गुलबर्गा विश्वविद्यालय गुलबर्गा

कार्यागार उद्घाटन एवं ग्रंथ अनावरण समारोह

दिनांक २९ अक्तूबर २०११ समय सुबह १०.३० बजे

हिन्दी अनुवादः उपनिवेश से उत्तर-उपनिवेश तक

कार्यागार का उद्घाटन कर बीज वक्तव्य देंगे,
प्रो प्रधान गुरूदत्त
मान्य अध्यक्ष, कुवेम्पू भाषा भारती प्राधिकार,बेंगलौर,

हिन्दूधर्म गांधी के दृष्टिकोण से
ग्रंथ का अनावरण होगा ,
श्री बसवराज पाटील सेडम के हाथों,
मान्य अध्यक्ष,कोत्तलबसवेश्वर शिक्षण संस्थान,सेडम्

अनावृत्त ग्रंथ की समीक्षा करेंगे
प्रो चंद्रकांत कुसनूर,
ख्यात एवं वरिष्ठ हिन्दी,कन्नड साहित्यकार,बेलगाम

मुख्य अतिथि रहेंगी
प्रो माणिक्यांबा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैद्राबाद

समारोह की अध्यक्षता निभायेंगे
प्रो ई.टी पुट्टय्या
माननीय कुलपति महोदय,
गुलबर्गा विश्वविद्यालय गुलबर्गा

दोपहर भोजन विराम : १ से २ बजे तक

संवाद गोष्ठि - १   दोपहर २ बजे

हिन्दी अनुवादः उपनिवेश का दौर

विषय मंडन : डॉ जे आत्माराम,
सहायक प्रोफेसर,हिन्दी विभाग,
हैद्राबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय,हैद्राबाद

डॉ संजय नवले
अध्यक्ष,हिन्दी विभाग,शिवाजी महाविद्यालय, बार्शी

अध्यक्षताः प्रो माणिक्यांबा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैद्राबाद

संवाद गोष्ठि - २   दोपहर ३ बजे

हिन्दी अनुवादः उत्तर-उपनिवेश का दौर

विषय मंडनः डॉ अरिमर्दनकुमार त्रिपाठी
संपादक,हिन्दीटेक्.इन, वेबपत्रिका, वाराणसी

डॉ के. कोकिला
सहायक प्रोफेसर, अनुवाद, अध्ययन विभाग,
EFL University हैद्राबाद

डॉ परिमळा अंबेकर,
अध्यक्ष,हिन्दी विभाग,गुलबर्गा विश्वविद्यालय, गुलबर्गा.

अध्यक्षताः डॉ. नरसिंगप्रसाद दुबे,
पूर्व प्राचार्य, श्री यशवंतराव महाविद्यालय, उदगीर.

कार्यागार का समापन समारोह

समय : दोपहर ४ बजे.

समापन संबोधनः प्रो चंद्रकांत कुसनूर,
ख्यात एवं वरिष्ठ हिन्दी,कन्नड साहित्यकार,बेलगाम

अध्यक्षताः प्रो वीरण्णा दंडे
डीन, कलानिकाय, गुलबर्गा विश्वविद्यालय गुलबर्गा

उन्जुर मा काल-ला तन्जुर मन काल
(देखो कि क्या कहा है, मत देखो कि किसने कहा है)

यूँ तो अनुवाद सृजनकर्म के पीछे घटित होनेवाली प्रक्रिया है, लेकिन यह अपने में सृजन की सारी आंतरिक एवं बाह्य मरोडों को ली हुयी होती है और वह भी दोहरे स्तर पर, अर्थात स्रोत एवं लक्ष्य के भाषायी एवं सांस्कृतिक स्तर पर। अनुवाद इस दोहरे स्तर की प्रक्रिया से होकर गुजरने के कारण, सृजनकर्म से बिल्कुल भिन्न स्तर की प्रतिबद्धता एवं दबाओं में जीता है । अनुवाद कर्म के पीछे के दबाव,चाहे धार्मिक हो या सत्ताकेन्द्रित ही क्यूँ न हो,लेकिन वह उस भाषायी समुदाय की सांस्कृतिक जीवन की संवेदना को पाठकों के सम्मुख बरबस खोलते जाता है , जिस भाषायी समुदाय में अनुवाद की प्रक्रिया घटी जा रही है । वेद,आगम, पुराण, गीता, बाईबल, कुरान ग्रंथों के अनुवाद,जहाँ अनुवाद की सांस्कृतिक जीवन की संभावनाओं को विश्वजीवन के बृहत्त फलक पर रंगबद्ध करते जाते हैं वहीं उसकी पिछली सतह पर सृजनकर्म की इतिमितियों के बिंदुओं को भी रिसाते जाते हैं । अनुवाद के इस अद्भुत कर्म एवं अनुवादक के विश्लेषी धर्म का लोहा हर स्थापित ख्यातिप्राप्त रचनाकार मानते आये हैं ।

हिन्दी अनुवाद में , भारत के विविध प्रांतीय, कस्बयी एवं जनांगीय साहित्य की भाषायी अस्मिता को राष्ट्र के विस्तृत पटल पर फोकस करने की अकूत शक्ति भरी हुयी है । साथ ही हिन्दी अनुवाद, भारतीय पाठकों के लिए, प्राच्य एवं पाश्चात्य साहित्य का दरवाजा भी अपने ही अंदाज में खोलते आया है । हिन्दी अनुवाद देश के उपनिवेशी प्रशासन दौर के आर्थिक एवं सांस्कृतिक दबाओं में बकायदा फार्म के रूप में जहाँ ढलते गया, वही आगे समय एवं संदर्भ के मांग के अनुकूल स्वतंत्रपूर्व एवं स्वातंत्र्योत्तर परिस्थितियों में अपने सुंदर निदर्शनों को प्रस्तुत करते भी आया है । आज, भूमंडलीकरण का उत्तर-उपनिवेशी दौर, हिन्दी अनुवाद के सम्मुख भिन्न स्तरीय प्रेरणा एवं प्रयोजनों को बिछा रहा है। आज अनुवाद व्यक्तिगत यां संस्थानिक प्रक्रिया की सीमा को लांघकर उपभोक्तावाद की बाजारनीति के समीकरण को सुलझाने में लगा है ।

देश के बाहरी एवं भीतरी चिंतन को, वैचारिक पहेल को ,मानवीय संवेदना को राष्ट्रस्तर पर प्रस्तुत करने की एक मात्र संभावना है हिन्दी अनुवाद । कारण हिन्दी अनुवाद के इन सारे श्रेयप्रेय को बटोरते हुए, उपनिवेशी संदर्भ से लेकर आज के उत्तर-उपनिवेशी समय की अनुवाद की इन्हीं सीमा संभावनाओं को देखने परखने के लिए यह कार्यागार गोष्ठियों के रूप में संवाद मंच को आपके लिए प्रस्तुत करता है । कारण सुधी अभ्यासक एवं चिंतक इन संवाद गोष्ठियों में सक्रीयता से भाग लें, यही हमारा अनुरोध है ।

कार्यागार में भागिदारी की अनुमति के लिए,
पंजीकरण शुल्क रू ३००/- निर्धारित है.

विशेष जानकारी के लिए,

सेल नं:०९४८०२२६६७७ अथवा ०९४४८४१४१८८

पर संपर्क करें। धन्यवाद...